www.iu.edu.sa

सऊदी अरब
उच्च शिक्षा मंत्रालय
इस्लामिक विश्वविद्यालय
(मदीना मुनव्वरा)
वैज्ञानिक अनुसंधान संस्था
अनुवाद भाग

तीन मूल सिद्धान्त
और
उनके प्रमाण

लैखक

शैखुल इस्लाम मुहम्मद बिन सुलैमान तमीमी

अनुवाद

सईद अहमद हयात मुशर्रफी

بسم الله الرحمن الرحيم

आप को मालूम होना चाहिये, अल्लाह आप पर कृपा करे, कि हम पर चार चीज़ों का सीखना अवश्य और जरूरी है। वह चीज़ें निम्नलिखित हैं:

पहली चीज़ : ज्ञान, अर्थात अल्लाह तआला को, और उसके रसूल तथा इस्लाम धर्म को उनके प्रमाणों समेत जानना।

दूसरी चीज़ : उस ज्ञान के अनुसार कर्म करना।

तीसरी चीज़ : उस ज्ञान की ओर दूसरे लोगों को बुलाना।

चौथी चीज़ : इस पथ में आने वाली कठिनाईयों तथा परेशानियों को सहन तथा सँयम करना।

इसका प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है :

﴿ وَٱلۡعَصۡرِ ۝١ إِنَّ ٱلۡإِنسَٰنَ لَفِي خُسۡرٍ ۝٢ إِلَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ وَتَوَاصَوۡاْ بِٱلۡحَقِّ وَتَوَاصَوۡاْ بِٱلصَّبۡرِ ۝٣ ﴾

(العصر 001-003)

अनुवाद :

«सौगन्ध है काल की, बेशक सारे इन्सान टूटे और घाटे में हैं, सिवाय उन लोगों के जो ईमान ले आये, और अच्छे अच्छे और नैक कार्य किये तथा एक दूसरे को हक़ (सत्य) तथा सँयम की वसिय्यत करते रहै।»

(सूरः अस्र आयतः 1-3)

इमाम *"शाफिई"* इस सूरत के विषय में फरमाते हैं कि यदि, अल्लाह तआला ने अपनी मख़्लूक़ अर्थात सृष्टि पर केवल यही सूरत उतार दी होती तो, यही लोगों पर हुज्जत और तर्क के तौर पर काफी और पर्याप्त होती।

इमाम *बुख़ारी* अपनी मश्हूर किताब (सहीह बुखारी शरीफ) में फरमाते हैं :

(यह अध्याय इस विषय में है कि (कहने और करने से पहले ज्ञान प्राप्त करना चाहिये।)

इस पर प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है:

﴿ فَٱعۡلَمۡ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ وَٱسۡتَغۡفِرۡ لِذَنۢبِكَ ﴿١٩﴾ ﴾

(محمد 019)

अनुवाद :

«ऐ हमारे रसूल, आप ज्ञान रखो कि अल्लाह तआला के अलावा कोई सत्य माबूद नहीं, और अपने पाप तथा गुनाहों की क्षमा माँगो।» (सूरः मुहम्मद आयतः 19)

अतः इस आयत में ज्ञान का चर्चा पहले तथा कथन व कर्म, अथवा कहने और करने का बाद में है।

अल्लाह की आप पर कृपा हो, आप यह भी जान लीजिये कि प्रत्येक मुसलमान, मर्द तथा औरत पर इन निम्नलिखित तीन चीज़ों का जानना और उनके अनुसार कर्म करना भी आवश्यक तथा वाजिब हैः

पहली चीज़ ः यह कि अल्लाह तआला ने हमको पैदा किया, वही हमको रोज़ी रोटी देता है, तथा पैदा करने के पश्चात उस ने हम को बेकार नहीं छोड़ा, बल्कि हमारे पास अपना रसूल अर्थात दूत भेजा, जो उनकी बात मानेगा वह जन्नत अर्थात स्वर्ग में जायेगा, और जो उनकी बात नहीं मानेगा वह जहन्नम अर्थात नरक में जायेगा।

इसका प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है

﴿ إِنَّآ أَرۡسَلۡنَآ إِلَيۡكُمۡ رَسُولٗا شَٰهِدًا عَلَيۡكُمۡ كَمَآ أَرۡسَلۡنَآ إِلَىٰ فِرۡعَوۡنَ رَسُولٗا ١٥ فَعَصَىٰ فِرۡعَوۡنُ ٱلرَّسُولَ فَأَخَذۡنَٰهُ أَخۡذٗا وَبِيلٗا ١٦ ﴾ (المزمل 015-016)

अनुवादः

«बेशक हम ने तुम्हारी ओर भी , तुम पर गवाही देने वाला, एक रसूल भेजा , जैसा कि हम ने फिरऔन (बादशाह) की तरफ एक रसूल भेजा था, किन्तु फिरऔन ने रसूल की बात न मानी तो हम ने उसको बड़ी सख़्ती के साथ दबोच लिया।» (सूरः मुज़्ज़म्मिल आयतः 15-16)

दूसरी चीज़ ः यह जानना कि अल्लाह तआला को यह बात कदापि पसँद नहीं कि उसकी इबादत अथवा उपासना में किसी अन्य को शरीक और साझी किया जाये। चाहे वह कोई फरिश्ता अथवा रसूल ही क्यों न हो।

इस का प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है

﴿ وَأَنَّ ٱلۡمَسَٰجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدۡعُواْ مَعَ ٱللَّهِ أَحَدٗا ١٨ ﴾ (الجن 018)

अनुवाद :

«मस्जिदें केवल अल्लाह की उपासना के लिये ख़ास हैं। तो तुम इनमें अल्लाह के अतिरिक्त, किसी अन्य को न पुकारो।» (सूरः जिन्न आयतः 18)

तीसरी चीज़ ः जिस ने रसूल की बात मान ली तथा केवल अल्लाह तआला को अपना सत्य और हक़ीक़ी माबूद (ईश्वर) मान लिया उसके लिये यह जायज़ नहीं कि वह उन लोगों से मित्रता और दोस्ती रखे जो

अल्लाह और उसके रसूल की बात नहीं मानते। चाहे वह उनके सब से क़रीबी रिश्तेदार ही क्यों न हों।

इसका प्रमाण यह है :

﴿ لَّا تَجِدُ قَوۡمٗا يُؤۡمِنُونَ بِٱللَّهِ وَٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِ يُوَآدُّونَ مَنۡ حَآدَّ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَلَوۡ كَانُوٓاْ ءَابَآءَهُمۡ أَوۡ أَبۡنَآءَهُمۡ أَوۡ إِخۡوَٰنَهُمۡ أَوۡ عَشِيرَتَهُمۡۚ أُوْلَٰٓئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ ٱلۡإِيمَٰنَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٖ مِّنۡهُۖ وَيُدۡخِلُهُمۡ جَنَّٰتٖ تَجۡرِي مِن تَحۡتِهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَاۚ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنۡهُمۡ وَرَضُواْ عَنۡهُۚ أُوْلَٰٓئِكَ حِزۡبُ ٱللَّهِۚ أَلَآ إِنَّ حِزۡبَ ٱللَّهِ هُمُ ٱلۡمُفۡلِحُونَ ٢٢ ﴾ (المجادلة 022)

अनुवाद :

«अल्लाह तआला तथा क़यामत (प्रलय) के दिन पर ईमान रखने वालों को आप कभी भी उन लोगों से दोस्ती और मित्रता करते हुऐ नहीं पा सकते जो अल्लाह और उसके रसूल के विरोधी हैं। चाहे वह उनके पिता अथवा पुत्र अथवा उनके भाई अथवा उनके परिवार के निकट सम्बन्धी ही क्यों न हों। यही लोग हैं जिनके दिल में अल्लाह तआला ने ईमान लिख दिया है। और जिनका समर्थन और मदद अपनी आत्मा से की है। तथा जिनको उन जन्नतों और स्वर्गों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे

शीतल जल की सरितायें और नहरें बहती हैं। उनमें यह सदैव और हमैशा रहेंगे, अल्लाह उन से खुश और यह अल्लाह से खुश हैं। यही लोग अल्लाह का गिरोह हैं। और जान लो कि बेशक अल्लाह का गिरोह ही सफल और कामयाब है।» (सूरः मुजादिला आयतः 22)

अल्लाह, आप की अपनी आज्ञापालन की ओर रहनुमाई और पथप्रदर्शन करे, आप यह भी जान लें कि हजरत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का धर्म और मार्ग अथवा (हनीफिय्यत) यह था कि आप अल्लाह की इबादत (पूजा), धर्म को उसके लिये ख़ालिस और निर्मल करते हुऐ करें।

इसी चीज़ का अल्लाह तआला ने सब लोगों को हुक्म (आदेश) दिया है, और इसी मक़्सद तथा उद्देश्य के लिये उनको पैदा किया है।

जैसा कि अल्लाह तआला का फरमान हैः

﴿ وَمَا خَلَقْتُ ٱلْجِنَّ وَٱلْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾ ﴾ (الذاريات 056)

अनुवादः

«मैं ने जिन्न एवं इन्सान को केवल अपनी इबादत और उपासना के लिये पैदा किया है।»

(सूरः जारियात आयत 56)

अतः इस आयत में अर्बी शब्द ﴿ يعبدون ﴾ का अर्थ यह है कि, मुझे ऐकमात्र जानो।

अल्लाह तआला ने जिन चीज़ों का आदेश व हुक्म दिया है उन में सब से बड़ी चीज़ ***तौहीद*** (अर्थात ऐकेश्वरवाद) है। जिसका अर्थ है कि अल्लाह तआला ही की केवल इबादत की जाये।

और जिन चीज़ों से मना किया है उनमें सबसे बड़ी चीज़ ***शिर्क*** अर्थात (अनेकेश्वरवाद) है। जिसका अर्थ है कि अल्लाह के साथ साथ किसी अन्य को भी पुकारा जाये।

इसका प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है:

﴿ ۞ وَٱعۡبُدُواْ ٱللَّهَ وَلَا تُشۡرِكُواْ بِهِۦ شَيۡـٔٗاۖ ﴾ (النساء 036)

अनुवाद :

«केवल अल्लाह तआला की इबादत करो और उसके साथ किसी भी अन्य चीज़ को शरीक और साझी मत करो।» (सूरः निसा आयतः 36)

तीन सिद्धान्त

अगर आप से पूछा जाये कि वह तीन आधार अर्थात उसूल अथवा सिद्धान्त क्या हैं? तो आप उत्तर दें कि वह यह हैं:

पहला : बन्दे का अपने रब और पालनहार को पहचानना।

दूसरा : अपने दीन (अर्थात धर्म) को जानना।

तीसरा : अपने रसूल हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जानना।

पहला सिद्धान्त

बन्दे का अपने रब को पहचानना।

अतः जब आप से कहा जाये कि आप का रब और पालनहार कोन है? तो आप यह उत्तर दीजिये कि मेरा रब, वह अल्लाह है जिसने अपनी कृपा से मुझे और दोनों जगत अर्थात दुनिया व आख़िरत (अथवा लोक- प्रलोक) को बनाया है। वही मेरा माबूद और पूज्य है, उसके सिवाय मेरा कोई माबूद और पूज्य नहीं है।

इसका प्रमाण यह है :

﴿ ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ۝٢ ﴾ (الفاتحة 002)

अनुवादः

«हर प्रकार की प्रशंसा दोनों जगत के पालनहार अल्लाह के लिये हैं।» (सूरः फातिहा आयतः 2)

अल्लाह तआला के अलावा (अर्थात अतिरिक्त) जो भी चीज़े हैं, वह सब जगत हैं, और मैं इस जगत का एक व्यक्ति हूँ। अतः मेरा माबूद भी अल्लाह ही ठहरा।

फ़िर जब आप से कहा जाये कि आप ने अपने रब को कैसे पहचाना? तो आप जवाब दें कि उसकी निशानियों और उस की मख़्लूक़ अर्थात सृष्टि के द्वारा।

उसकी निशानियों में से रात दिन तथा चाँद और सूरज हैं। और उसकी मख़्लूक़ (सृष्टि) में से सातों आसमान, सातों ज़मीन और जो कुछ उन के अन्दर और जो कुछ उनके बीच में है, हैं।

प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है:

﴿ وَمِنْ ءَايَـٰتِهِ ٱلَّيْلُ وَٱلنَّهَارُ وَٱلشَّمْسُ وَٱلْقَمَرُ ۚ لَا تَسْجُدُوا۟ لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَٱسْجُدُوا۟ لِلَّهِ ٱلَّذِى خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿٣٧﴾ ﴾ (فصلت 37)

अनुवाद :

«और उस (यानी अल्लाह) की निशानियों में से रात, दिन, सूरज और चाँद हैं। तुम सूरज और चाँद के आगे सज्दा न करो, बल्कि सज्दा केवल उस अल्लाह के सामने करो जिस ने उन सब चीज़ों को पैदा किया है। अगर तुम को उसी की इबादत करनी है तो००।»

(सूरः फुस्सिलत आयतः 37)

और (इसी प्रकार) अल्लाह का यह कथनः

﴿ إِنَّ رَبَّكُمُ ٱللَّهُ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ فِى سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ ٱسْتَوَىٰ عَلَى ٱلْعَرْشِ يُغْشِى ٱلَّيْلَ ٱلنَّهَارَ يَطْلُبُهُۥ حَثِيثًا

وَٱلشَّمۡسَ وَٱلۡقَمَرَ وَٱلنُّجُومَ مُسَخَّرَٰتِۭ بِأَمۡرِهِۦٓۗ أَلَا لَهُ ٱلۡخَلۡقُ وَٱلۡأَمۡرُۗ تَبَارَكَ ٱللَّهُ رَبُّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ﴿٥٤﴾ ﴾ (الأعراف 054)

अनुवाद :

«बेशक (निःसंदेह) तुम्हारा रब (पालनहार) वह अल्लाह है जिसने आसमान और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया, फ़िर अर्श (सिंहासन) पर (मुस्तवी) हो गया, वह रात को दिन से इस तरह छुपा देता है कि वह उसे तेज़ रफ्तार से आलेता है, तथा सूरज, चाँद और सितारों को इस प्रकार पैदा किया कि वह सब उसके आदेश (हुक्म) के आधीन हैं। लोगो सुन लो! केवल उसी अल्लाह के हाथ में रचना और सारे आदेश हैं। सारे जहानों अथवा संसारों का पालनहार तो बड़ा ही शुभः है।»

(सूरः आराफ आयतः 54)

और केवल पालनहार ही इबादत (पूजा) का हक़दार होता है। इसका प्रमाण यह है:

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمُ ٱلَّذِي خَلَقَكُمۡ وَٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ﴿٢١﴾ ٱلَّذِي جَعَلَ لَكُمُ ٱلۡأَرۡضَ فِرَٰشٗا وَٱلسَّمَآءَ بِنَآءٗ وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءٗ فَأَخۡرَجَ بِهِۦ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ رِزۡقٗا لَّكُمۡۖ فَلَا تَجۡعَلُواْ لِلَّهِ أَندَادٗا وَأَنتُمۡ تَعۡلَمُونَ ﴿٢٢﴾ ﴾ (البقرة 021-022)

अनुवाद :

«ऐ लोगो! अपने उस रब की इबादत करो जिसने तुम को और तुमसे पहले वाले लोगों को पैदा किया, आशा है इस से तुम सदाचारी बन जाओगे। जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछोना तथा आसमान को छत की तरह बनाया। और आसमान से बारिश बरसाई, जिस से तरह तरह के फ़लों को तुम्हारे लिये रोज़ी बना कर निकाला। अतः यह जान पूछ कर तुम अल्लाह के लिये शरीक (साझी) न बनाओ।» (सूरः बक़रा आयतः 21 -25)

इमाम इब्नेकसीर (उन पर अल्लाह की दया हो) फरमाते हैंः

(الخالق لهذه الأشياء هو المستحق للعبادة)

अर्थात (इन सारी चीज़ों का पैदा करने वाला ही इबादत (पूजा) का हक़दार है।)

इबादत (उपासना) के वह प्रकार भी केवल अल्लाह का हक़ हैं, जिनके करने का अल्लाह तआला ने आदेश दिया है, जैसे इस्लाम, ईमान, एहसान (उपकार), दुआ, डर, उम्मीद (आशा), भरोसा, शौक़ (रुची), भय, विनम्रता, अल्लाह की तरफ प्रत्यागमन, सहायता माँगना, पनाह माँगना, मदद माँगना, जब्ह (अर्थात बलि) करना तथा प्रतिज्ञा मानना आदि।

प्रमाण अल्लाह का यह कथन है :

﴿ وَأَنَّ ٱلۡمَسَٰجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدۡعُواْ مَعَ ٱللَّهِ أَحَدٗا ١٨ ﴾

(الجن 018)

अनुवाद :

«और यह कि मस्जिदें केवल अल्लाह के लिये ख़ास हैं, इसलिये अल्लाह के साथ किसी दूसरे को न पुकारो।» (सूरः जिन्न आयतः 18)

यदि किसी ने इन उपासनाओं (इबादतों) में से किसी भी प्रकार को अल्लाह के अलावा किसी अन्य के लिये किया तो वह मुश्रिक (बहुदेववादी) और काफिर (नास्तिक) है।

इस का प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿ وَمَن يَدۡعُ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ لَا بُرۡهَٰنَ لَهُۥ بِهِۦ فَإِنَّمَا حِسَابُهُۥ عِندَ رَبِّهِۦٓۚ إِنَّهُۥ لَا يُفۡلِحُ ٱلۡكَٰفِرُونَ ١١٧ ﴾ (المؤمنون 117)

अनुवाद :

«और जो भी अल्लाह के साथ किसी ऐसे माबूद (देवता) को पुकारेगा जिसके बारे में उसके पास कोई प्रमाण नहीं, तो ऐसे व्यक्ति का हिसाब उसके (हक़ीक़ी) माबूद ही पर है। बेशक काफिर (नास्तिक) लोग कामयाब नहीं हो सकते।» (सूरः मुमिनून आयतः 117)

और हदीस शरीफ में आया है कि:

ع الدعاء مخ العبادة ع

अर्थात : (दुआ इबादत का गूदा (जान) है।)

इस का प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है:

﴿ وَقَالَ رَبُّكُمُ ٱدۡعُونِيٓ أَسۡتَجِبۡ لَكُمۡۚ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَسۡتَكۡبِرُونَ عَنۡ عِبَادَتِي سَيَدۡخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ﴿٦٠﴾ ﴾

(غافر 060)

अनुवाद :

«तुम्हारे रब यह कह चुके हैं कि (केवल) मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार (क़बूल) करुंगा, बेशक जो लोग मेरी इबादत करने से घमँड करते हैं वह जल्दी (शीघ्र) ही अपमानित (रुसवा व जलील) होकर नरक (जहन्नम) में जायेंगे।» (सूरः ग़ाफिर आयतः 60)

<u>भय</u> (के उपासना होने) की दलील यह है:

﴿ فَلَا تَخَافُوهُمۡ وَخَافُونِ إِن كُنتُم مُّؤۡمِنِينَ ﴾ (آل عمران 175)

अनुवाद :

«तुम अगर मुमिन हो तो उन से न डरो, (केवल) मुझ से डरो।» (सूरः आल इमरान आयतः 175)

आशा (भी इबादत है), इसकी दलील यह है:

﴿ فَمَن كَانَ يَرۡجُواْ لِقَآءَ رَبِّهِۦ فَلۡيَعۡمَلۡ عَمَلٗا صَٰلِحٗا وَلَا يُشۡرِكۡ بِعِبَادَةِ رَبِّهِۦٓ أَحَدَۢا ﴿١١٠﴾ ﴾ (الكهف 110)

अनुवाद :

«तो जो व्यक्ति (क़यामत के दिन) अपने मालिक से मिलने की आशा रखता हो, उसको चाहिये कि अच्छे और नैक कर्म करे, और अपने रब की इबादत में किसी अन्य को शरीक (साझी) न करे।» (सूरः कहफ आयतः 110)

भरोसे के इबादत होने की दलील यह है:

﴿ وَعَلَى ٱللَّهِ فَتَوَكَّلُوٓاْ إِن كُنتُم مُّؤۡمِنِينَ ﴾ (المائدة 023)

अनुवाद :

«अगर तुम मुमिन हो तो केवल अल्लाह ही पर भरोसा रखो।» (सूरः माईदः आयतः 23)

अल्लाह तआला का और (दूसरा) फरमान है:

﴿ وَمَن يَتَوَكَّلۡ عَلَى ٱللَّهِ فَهُوَ حَسۡبُهُۥٓ ﴾ (الطلاق 003)

अनुवादः «जो आदमी अल्लाह पर भरोसा करेगा तो वह (यानी अल्लाह तआला) उसके लिये काफी है।»

(सूरः तलाक़ आयतः 3)

शौक़ (रग़बत) **दहशत**, **आजिज़ी** (विवसता, विनम्रता) की दलील अल्लाह तआला का यह फरमान हैः

﴿ إِنَّهُم كَانُواْ يُسَٰرِعُونَ فِي ٱلۡخَيۡرَٰتِ وَيَدۡعُونَنَا رَغَبٗا وَرَهَبٗاۖ وَكَانُواْ لَنَا خَٰشِعِينَ ﴾ (الأنبياء 090)

अनुवाद :

«बेशक वह लोग अच्छी और भली चीज़ों की ओर लपकते थे, और हमको शौक़ तथा डर के साथ पुकारते थे और केवल हमारे ही सामने गिड़गिड़ाते थे।»

(अम्बिया आयतः 90)

ख़शियत (डर से लरज़ना) के उपासना होने की दलील अल्लाह तआला का यह फरमान हैः

﴿ فَلَا تَخۡشَوۡهُمۡ وَٱخۡشَوۡنِي ﴾ (البقرة 150)

अनुवाद :

«उन के डर से मत लरज़ो, मेरे डर से लरज़ो।»

(बक़रः आयतः 150)

इनाबत (अर्थातः अल्लाह की ओर पलटना और तौबा करना) की दलील अल्लाह का यह फरमान हैः

﴿ وَأَنِيبُوٓاْ إِلَىٰ رَبِّكُمۡ وَأَسۡلِمُواْ لَهُۥ ﴾ (الزمر 054)

अनुवाद :

«तुम अपने मालिक की तरफ पलटो और उसी के आज्ञाकारी बनो।» [ज़ुमर आयतः 54]

<u>सहायता</u> माँगना (के इबादत होने) की दलील अल्लाह का यह फरमान है:

﴿ إِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَإِيَّاكَ نَسۡتَعِينُ ۝٥ ﴾ (الفاتحة 005)

अनुवाद :

«ऐ अल्लाह) हम केवल तेरी ही इबादत करते हैं। और केवल तुझ ही से सहायता माँगते हैं।»

(फातिहा आयतः 5)

और हदीस शरीफ में आया है:

ﷺإذا استعنت فاستعن بالله

अनुवाद :

(जब तुम सहायता तलब करो तो (केवल) अल्लाह तआला से ही तलब करो।)

<u>शरण व पनाह चाहना</u> (के उपासना होने की) दलील यह है :

﴿ قُلۡ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلنَّاسِ ۝١ مَلِكِ ٱلنَّاسِ ۝٢ ﴾ (الناس 001-002)

अनुवाद :

«ऐ हमारे नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप कह दीजिये कि मैं लोगों के रब और उनके मालिक की पनाह माँगता हूँ।» (नास आयतः 1-2)

फरियाद करना (के इबादत होने) की दलील अल्लाह तआला का यह कथन है :

﴿ إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَٱسْتَجَابَ لَكُمْ ﴾ (الأنفال 009)

अनुवाद :

«याद करो उस समय को जब तुम अपने रब से फरियाद कर रहे थे, तो तुम्हारी फरियाद उस ने क़बूल कर ली।» (अनफाल आयतः 9)

ज़ब्ह (बलिदान देना) के इबादत होने की दलील अल्लाह तआला का यह फरमान हैः

﴿ قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ١٦٢ لَا شَرِيكَ لَهُۥ ۖ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا۠ أَوَّلُ ٱلْمُسْلِمِينَ ١٦٣ ﴾

(الأنعام 162-163)

अनुवाद :

«ऐ हमारे नबी) आप कह दीजिये कि मेरी नमाज़, मेरी कुरबानी (बलिदान), मेरा जीना और मेरा मरना, सब अल्लाह तआला के लिये है, जो दोनों संसारों का पालनहार है। उसका कोई शरीक (साझी) नहीं। इसी का मुझे आदेश (हुक्म) है। और मैं सब से पहला (उसके लिये) आत्मसमर्पण करने वाला हूँ।» (अनआम आयतः 162-163)

बलिदान के इबादत होने की हदीस शरीफ से दलील यह है :

ع لعن الله من ذبح لغير الله ع [رواه مسلم]

अनुवाद :

(अल्लाह तआला की लानत (अभिशाप) हो ऐसे आदमी पर जो अल्लाह को छोड़ कर किसी अन्य को बलि पैश करता है।) [सहीह मुस्लिम]

<u>नज्र (प्रतिज्ञा)</u> मानने के इबादत होने की दलील यह है :

﴿ يُوفُونَ بِٱلنَّذۡرِ وَيَخَافُونَ يَوۡمٗا كَانَ شَرُّهُۥ مُسۡتَطِيرٗا ۝٧ ﴾

(الإنسان 007)

अनुवाद :

«वह अपनी प्रतिज्ञा (नज्र) पूरी करते हैं। और उस दिन से डरते हैं जिसकी परेशानी हर तरफ फ़ैली हुई होगी।» [इन्सान आयतः 7]

दूसरा सिद्धान्त

इस्लाम (धर्म) को प्रमाण सहित जानना।

(इस्लाम का) अर्थ यह है कि व्यक्ति तौहीद (ऐकेश्वरवाद) और अल्लाह की आज्ञाकारी के द्वारा अल्लाह के सामने झुक जाये, तथा शिर्क (बहुदेववाद) और शिर्क वालों से (हाथ झाड़ कर) अलग हो जाये।

इस दीन की (निम्नलिखित) तीन श्रेणियाँ हैंः

1- **इस्लाम**
2- **ईमान**
3- **एहसान**

इन श्रेणियों में से हर श्रेणी के कुछ स्तम्भ हैंः

❁ **पहली श्रेणी (इस्लाम)** के पाँच अरकान (स्तम्भ) हैं। इनका विस्तार इस प्रकार हैः

1- इस बात की शहादत (गवाही) देना कि अल्लाह के अलावा कोई सच्चा माबूद नहीं। तथा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।

2- नमाज़ पढ़ना।

3- ज़कात (धर्मादाय) देना।

4- रमजान के रोज़े (वृत) रखना।

5- हज्ज करना।

इस्लाम के पहले रुक्न (स्तम्भ) की दलील अल्लाह तआला का यह फरमान है:

﴿ شَهِدَ ٱللَّهُ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَأُوْلُواْ ٱلْعِلْمِ قَآئِمَۢا بِٱلْقِسْطِ ۚ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿١٨﴾ ﴾ (آل عمران 018)

अनुवाद :

«(स्वयं) अल्लाह तआला ने, तथा उसके फरिश्तों और ज्ञान रखने वालों ने न्यायपूर्वक यह गवाही दी है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई (सच्चा) माबूद नहीं है। (हाँ) उसके अलावा कोई (सच्चा) माबूद नहीं है। वही बल, शक्ति तथा हिक्मत वाला है।» [आले इमरान आयत 18]

इसका अर्थ हुआ कि अल्लाह तआला के अलावा कोई (सच्चा) माबूद नहीं है।

﴿لا إله﴾ के वाक्य में हर उस चीज़ का इनकार मौजूद है जिसकी अल्लाह के अतिरिक्त पूजा की जा सकती है ।

और ﴿ إلا الله ﴾ का वाक्य केवल अल्लाह की इबादत (उपासना) को साबित करता है। उसकी इबादत में कोई शरीक (साझी) नहीं, जैसा कि उसकी बादशाहत में कोई शरीक नहीं।

इस की तफ्सीर (व्याख्या) अल्लाह तआला का यह फरमान करता हैः

﴿ وَإِذْ قَالَ إِبْرَٰهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِۦٓ إِنَّنِى بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ﴿٢٦﴾ إِلَّا ٱلَّذِى فَطَرَنِى فَإِنَّهُۥ سَيَهْدِينِ ﴿٢٧﴾ وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِى عَقِبِهِۦ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾ ﴾ (الزخرف 026-028)

अनुवाद :

«और जब (हजरत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने पिता और अपनी क़ौम से कहा कि मैं तो तुम्हारे (झूठे) माबूदों से बिल्कुल बरी (मुक्त) हूँ। (उन से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं) , मेरा सम्बन्ध केवल उस (अल्लाह पाक) से है जिस ने मुझे पैदा फरमाया है। क्योंकि वही मुझे हिदायत (मार्गदर्शन) देगा। और (इब्राहीम अलैहिस्सलाम) यही शब्द अपनी औलाद (संतान) में छोड़ कर गये। ताकि वह (अर्थात मक्का वाले लोग) इस शब्द की तरफ पलट आयें।» [ज़ुख़रुफ आयतः 26-28]

(इसी प्रकार इस की व्याख्या) अल्लाह तआला का यह फरमान भी करता हैः

﴿ قُلْ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ تَعَالَوْا۟ إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَآءٍۭ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا ٱللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِۦ شَيْـًٔا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا

بَعۡضًا أَرۡبَابٗا مِّن دُونِ ٱللَّهِۚ فَإِن تَوَلَّوۡاْ فَقُولُواْ ٱشۡهَدُواْ بِأَنَّا

مُسۡلِمُونَ ﴿٦٤﴾ ﴾ (آل عمران 064)

अनुवाद :

«ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) आप इन यहूदी तथा ईसाई धर्म वालों से कह दीजिये कि एक ऐसी बात की तरफ आ जाओ जो हमारे और तुम्हारे बीच बराबर है। वह यह कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की इबादत न करें, और न ही उस के साथ किसी अन्य को शरीक (साझी) करें। और न ही हम आपस में एक दूसरे को, अल्लाह तआला को छोड़ कर अपना खुदा बना लें। (ऐ मुहम्मद!) अगर वह मुँह फ़ेर लें तो कह दो कि, तुम गवाह रहो कि, हम तो मुसलमान हैं।»

[आले इमरान आयतः 64]

<u>हजरत मुहम्मद</u> (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के अल्लाह के रसूल होने की शहादत व गवाही देने की दलील अल्लाह का यह फरमान हैः

﴿ لَقَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُولٞ مِّنۡ أَنفُسِكُمۡ عَزِيزٌ عَلَيۡهِ مَا عَنِتُّمۡ

حَرِيصٌ عَلَيۡكُم بِٱلۡمُؤۡمِنِينَ رَءُوفٞ رَّحِيمٞ ﴿١٢٨﴾ ﴾ (التوبة 128)

अनुवाद :

«ऐ लोगो!) तुम्हारे पास तुम ही में से एक रसूल आ चुके हैं, तुम्हें नुक़्सान और हानि पहुँचाने वाली चीज़ें उन पर बड़ी भारी गुज़रती है। वह तुम्हारी भलाई के बड़े लालसी और इच्छुक, तथा ईमान वालों के लिये बड़े नरम और रहमदिल हैं।» [तौबा आयतः 128]

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के अल्लाह के रसूल होने की शहादत व गवाही देने का अर्थ यह है किः आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आदेशों का पालन करें। जिन चीज़ों की आप ने ख़बर और सूचना दी है उनको सच जानें, जिन चीज़ों के करने से मना किया है उनको न करें, तथा अल्लाह तआला की इबादत व पूजा उस तरीके पर करें जो तरीक़ा आप ने बताया है।

<u>नमाज़, ज़कात, तथा तौहीद</u> (ऐकेश्वरवाद) की व्याख्या की दलील अल्लाह तआला का यह फरमान हैः

﴿ وَمَآ أُمِرُوٓاْ إِلَّا لِيَعۡبُدُواْ ٱللَّهَ مُخۡلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ حُنَفَآءَ وَيُقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤۡتُواْ ٱلزَّكَوٰةَۚ وَذَٰلِكَ دِينُ ٱلۡقَيِّمَةِ ۝٥ ﴾ (البينة 005)

अनुवाद :

«उनको केवल इस चीज़ का आदेश दिया गया था कि वह अल्लाह की इबादत (उसके) दीन को उसके लिये

ख़ालिस (निर्मल) करके तथा तमाम चीज़ों से कटकर करें, नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें। और यही सत्य तथा उत्तम दीन है।» [बय्यिना आयतः 5]

रोज़ा रखने की दलील अल्लाह का यह फरमान है:

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ١٨٣ ﴾ (البقرة 183)

अनुवाद :

«ऐ इमान वालो! तुम पर रोज़े रखना वाजिब (अनिवार्य) हैं। जिस प्रकार तुम से पहले वाले लोगों पर वाजिब थे। ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।»

[बक़रा आयतः 183]

हज्ज का प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है :

﴿ وَلِلَّهِ عَلَى ٱلنَّاسِ حِجُّ ٱلۡبَيۡتِ مَنِ ٱسۡتَطَاعَ إِلَيۡهِ سَبِيلٗاۚ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ ٱلۡعَٰلَمِينَ ٩٧ ﴾ (آل عمران 097)

अनुवाद :

«जो लोग हज्ज करने की ताक़त तथा शक्ति रखते हैं उन पर अल्लाह के वास्ते काबा शरीफ का हज्ज करना वाजिब तथा अनिवार्य है। यदि कोई इन्कार करता है तो (करे) अल्लाह तआला तो सारे संसारों से बेनियाज़ है।»

[आले इमरान आयतः 97]

❁ **दूसरी श्रेणी (ईमान) है**। इसकी सत्तर (70) से अधिक शाखा हैं। उन में सब से ऊँची शाखा **(لا إله إلا الله)** (ला इलाहा इल्लल्लाह) कहना है। तथा सब से नीची शाखा रास्ते से दुःख देने वाली चीज़ को हटा देना है। तथा शर्म ईमान की एक शाखा है।

ईमान के (निम्नलिखित) **छः** स्तम्भ हैं :

1- अल्लाह तआला पर ईमान लाना।
2- उसके फरिश्तों पर ईमान लाना।
3- उसकी किताबों पर ईमान लाना।
4- उसके रसूलों पर ईमान लाना।
5- क़यामत (प्रलय) के दिन पर ईमान लाना।
6- तथा अच्छी - बुरी क़िस्मत (भाग्य) पर ईमान लाना।

इन पर दलील अल्लाह तआला का यह फरमान है :

﴿ ۞ لَّيْسَ ٱلْبِرَّ أَن تُوَلُّوا۟ وُجُوهَكُمْ قِبَلَ ٱلْمَشْرِقِ وَٱلْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ ٱلْبِرَّ مَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةِ وَٱلْكِتَٰبِ وَٱلنَّبِيِّۦنَ ﴾ (البقرة 177)

अनुवाद :

«नेकी यह नहीं है कि तुम अपने मुख पूर्व अथवा पश्चिम की ओर फ़ेर लो, बल्कि नेकी यह है कि आदमी

अल्लाह पर, क़यामत के दिन पर, फरिश्तों पर, (आसमानी) किताबों पर, तथा रसूलों पर ईमान रखे।»

[बक़रा आयतः 177]

क़िस्मत (भाग्य) की दलील यह है :

﴿ إِنَّا كُلَّ شَيۡءٍ خَلَقۡنَٰهُ بِقَدَرٖ ﴿٤٩﴾ ﴾ (القمر 049)

अनुवाद :

«हम ने हर चीज़ को एक ख़ास अन्दाज़े (अनुमान) के साथ पैदा किया है।» [क़मर आयतः 49]

❁ तीसरी श्रेणी : ऐहसान है :

एहसान का एक ही स्तम्भ है, वह यह कि अल्लाह की इबादत इस प्रकार करो कि जैसे आप उसको देख रहे हों, यदि आप उसको नहीं देख रहे हो तो (यह ख़्याल रखो कि) वह तुम को (अवश्य) देख रहा है।

इसका प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है :

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ مَعَ ٱلَّذِينَ ٱتَّقَواْ وَّٱلَّذِينَ هُم مُّحۡسِنُونَ ﴿١٢٨﴾ ﴾

(النحل 128)

अनुवाद :

«बेशक अल्लाह तआला परहेज़गारों और एहसान करने वालों के साथ है।» [नह्ल आयतः 128]

इसी प्रकार अल्लाह तआला का यह फरमान :

﴿ وَتَوَكَّلۡ عَلَى ٱلۡعَزِيزِ ٱلرَّحِيمِ ٢١٧ ٱلَّذِي يَرَىٰكَ حِينَ تَقُومُ ٢١٨ وَتَقَلُّبَكَ فِي ٱلسَّٰجِدِينَ ٢١٩ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡعَلِيمُ ٢٢٠ ﴾

(الشعراء 217-220)

अनुवाद :

«उस ताक़त और रहम (दया व कृपा) वाले (अल्लाह) पर भरोसा रखो जो तुम को उस समय देख रहा होता है जब तुम उठते हो, और सज्दा करने वालों में, तुम्हारे घूमने फ़िरने को भी देखता है। बेशक वही सुनने वाला और ज्ञान रखने वाला है।» [शुअरा आयतः 217-220]

और इसी प्रकार अल्लाह तआला का यह फरमान :

﴿ وَمَا تَكُونُ فِي شَأۡنٖ وَمَا تَتۡلُواْ مِنۡهُ مِن قُرۡءَانٖ وَلَا تَعۡمَلُونَ مِنۡ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيۡكُمۡ شُهُودًا إِذۡ تُفِيضُونَ فِيهِۚ ﴾ (يونس 061)

अनुवाद :

«आप जिस हाल में भी हों, और आप उसमें जो भी कुरआन पढ़ो, और (ऐ लोगो!) तुम जो भी काम करो हम को उसकी अवश्य सूचना रहती है, जब तुम उसमें व्यस्त रहते हो।» [यूनुस आयतः 61]

सुन्नत से दलील जिब्राईल वाली (निम्नलिखित) मश्हूर हदीस है :

(हजरत उमर फारूक़ बयान करते हैं कि हम प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास बेठे हुऐ थे, अचानक हमारे पास एक आदमी आया, उनके कपड़े बहुत सफेद और बाल बहुत काले थे, उन पर सफर की कोई निशानी भी नहीं थी, और न ही हम में से कोई उनको जानता था, वह आये और अपने घुटने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के घुटनों से मिला कर और अपनी हथेली नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की जाँघ पर रख कर बेठ गये, और कहा : ऐ मुहम्मद! मुझे इस्लाम के बारे में बताइये। आप ने फरमायाः इस्लाम यह है कि तुम यह गवाही दो कि मुहम्मद, अल्लाह के नबी व रसूल हैं। तथा नमाज़ पढ़ो, ज़कात दो, रमजान के महीने के रोज़े रखो और अगर ताक़त हो तो काबा शरीफ का हज्ज करो। उन्होंने कहाः आप ने सच फरमाया। (हजरत उमर कहते हैं कि) हम को आश्चर्य और हैरानी हुई कि पूछते भी हैं और स्वयं तस्दीक़ (पुष्टि) भी करते हैं।

फ़िर उन्होंने कहा कि मुझे ईमान के बारे में बताइये। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया किः ईमान यह है कि तुम अल्लाह पर, उसके फरिश्तों पर, उस की किताबों, उसके रसूलों, क़्यामत के दिन तथा अच्छी-बुरी तक़्दीर (भाग्य) पर ईमान रखो। (अर्थातः उनको सच जानो।) उन्होंने कहाः आप ने सच फरमाया।

फ़िर उन्होंने कहा कि मुझे (एहसान) के बारे में बताइये। आप ने फरमायाः एहसान यह है कि अल्लाह की इबादत इस प्रकार करो कि जैसे आप उस को देख रहे हों। अगर आप उसको नहीं देखते तो (यह समझो) कि वह तुम को अवश्य देख रहा है।

उन्होंने कहा कि क़्यामत के बारे में मुझे बताइये। आप ने फरमायाः इसको पूछने वाला ही ज़ियादा जानता है। उन्होंने कहाः तो फ़िर उसकी निशानियों के बारे में ही कुछ बताइये। आप ने फरमाया किः लोंडी (बाँदी) अपनी मालिकन को जन्म देगी। नंगे, फक़ीर, भेड़ बकरियाँ चराने वाले बड़ी बड़ी इमारतें और भवन बनाने में एक दूसरे का मुक़ाबला करेंगे।

हजरत उमर फरमाते हैं कि फ़िर वह उठ कर चले गये। थोड़ी देर के बाद आप ने फरमायाः ऐ उमर! मालूम है यह प्रश्न करने वाले कोन थे? मैं ने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल ही ज़ियादा जानते हैं। तब आप ने फरमाया कि यह जिब्राईल थे, तुम को तुम्हारा दीन सिखाने आये थे।)

तीसरा सिद्धान्त

अपने नबी को पहचानना।

आप का नाम मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह पुत्र अब्दुल मुत्तलिब पुत्र हाशिम है। (हाशिम), कुरैश खानदान से, तथा कुरैश एक अर्बी खानदान है। और अरब (लोग) हजरत इस्माईल पुत्र हजरत इब्राहीम ख़लील (अलैहिमस्सलाम) की औलाद हैं।

(हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने तरेसठ (63) साल की उम्र (आयु) पायी, जिन में से चालीस (40) साल नबी बनाये जाने से पहले के, तथा तैईस (23) साल नबी बनाये जाने के बाद के हैं।

﴿اقرأ﴾ नामी सूरत के द्वारा आप को नबी बनाया गया।

और **﴿المدثر﴾** नामी सूरत के द्वारा रसूल बनाया गया। आप **मक्का** शहर के रहने वाले थे, फ़िर आप उस को छोड़ कर **मदीना** शहर में आ गये।

अल्लाह तआला ने आप को इस लिये रसूल बना कर भेजा ताकि आप, लोगों को शिर्क (बहुदेववाद) से डरायें तथा तौहीद (ऐकेश्वरवाद) की तरफ दावत दें।

इसकी दलील अल्लाह तआला का यह फरमान हैः

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلۡمُدَّثِّرُ ۝١ قُمۡ فَأَنذِرۡ ۝٢ وَرَبَّكَ فَكَبِّرۡ ۝٣ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرۡ ۝٤ وَٱلرُّجۡزَ فَٱهۡجُرۡ ۝٥ وَلَا تَمۡنُن تَسۡتَكۡثِرُ ۝٦ وَلِرَبِّكَ فَٱصۡبِرۡ ۝٧ ﴾ (المدثر 001-007)

अनुवाद :

«ऐ चादर ओढ़ कर लेटने वाले! उठो, और लोगों को हौशियार (सावधान) करो, और केवल अपने रब की ही बड़ाई व प्रशंसा बयान करो, अपने कपड़े (और दिल) साफ रखो, बुतों को छोड़ दो, और ज़ियादा लेने की वजह से किसी के साथ एहसान न करो, और अपने रब की ख़ातिर सब्र (सहन) करो।» [मुद्दस्सिर आयतः 1-7]

﴿قم فأنذر﴾ का अर्थ है किः शिर्क से डरो और तौहीद की ओर दावत दो।

﴿وربك فكبر﴾ का अर्थ है कि अपने रब की, तौहीद के द्वारा बड़ाई बयान करो।

﴿ و ثيابك فطهّر ﴾ का अर्थ है कि अपने कर्मों (आमाल और दिल) को शिर्क से पाक करो।

﴿ والرجز فاهجر﴾ का अर्थ है कि बुतों और उनके पुजारियों से रिश्ता-नाता तोड़ लो।

इसी को लेकर आप दस (10) साल तक (मक्का शहर में) तौहीद की ओर बुलाते रहे। फ़िर आप को आसमान की सैर कराई गई। वहीं आप पर पाँच समय की नमाज़ फर्ज (अनिवार्य) की गई। आप तीन साल मक्का में नमाज़ पढ़ते रहे। और फ़िर आपको मदीना की तरफ हिजरत कर जाने का हुक्म (आदेश) हुआ।

हिजरत का अर्थः शिर्क के शहर (अथवा देश) को छोड़ कर इस्लाम के शहर (अथवा देश) की तरफ चले जाने को हिजरत कहते हैं।

हिजरत, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की उम्मत पर क़यामत तक फर्ज (अनिवार्य) है।

इसका प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है :

﴿ إِنَّ ٱلَّذِينَ تَوَفَّىٰهُمُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ ظَالِمِىٓ أَنفُسِهِمْ قَالُوا۟ فِيمَ كُنتُمْ ۖ قَالُوا۟ كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِى ٱلْأَرْضِ ۚ قَالُوٓا۟ أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ ٱللَّهِ وَٰسِعَةً فَتُهَاجِرُوا۟ فِيهَا ۚ فَأُو۟لَٰٓئِكَ مَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَسَآءَتْ مَصِيرًا ﴿٩٧﴾ إِلَّا ٱلْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ ٱلرِّجَالِ وَٱلنِّسَآءِ وَٱلْوِلْدَٰنِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ﴿٩٨﴾ فَأُو۟لَٰٓئِكَ عَسَى ٱللَّهُ أَن يَعْفُوَ عَنْهُمْ ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿٩٩﴾ ﴾ (النساء 097-099)

अनुवाद :

«बेशक जिन लोगों ने अपने ऊपर अत्याचार किये, उन से फरिश्तों ने उनकी जान निकालते समय कहा कि तुम किस हाल में थे? उन्होंने कहा कि हम ज़मीन में विवस थे। फरिश्तों ने कहा कि क्या अल्लाह की ज़मीन विस्तृत नहीं थी कि तुम उसमें हिजरत कर जाते? इन्ही लोगों का ठिकाना जहन्नम (नरक) है। और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है। सिवाय उन मर्दों, औरतों और बच्चों के जो विवस हैं, और उनके पास कोई हीला-तरीक़ा और उपाय नहीं है। ऐसे लोगों को, उम्मीद है अल्लाह तआला माफ और क्षमा कर देगा। अल्लाह तआला बहुत माफ करने वाला और बख़्शने वाला है।» [निसा आयतः 97-99]

इसी प्रकार अल्लाह का और फरमान है :

﴿ يَـٰعِبَادِىَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِنَّ أَرۡضِى وَٰسِعَةٌ فَإِيَّـَٰىَ فَٱعۡبُدُونِ ﴿٥٦﴾ ﴾ (العنكبوت 056)

अनुवाद :

«ऐ मेरे मुमिन बन्दो! बेशक मेरी ज़मीन विस्तृत है। अतः केवल मेरी ही इबादत (पूजा) करो।»

[अनकबूत आयतः 56]

इमाम ***बग़वी*** फरमाते हैं कि इस आयत के उतरने का कारण यह है कि कुछ मुसलमानों ने मक्का से हिजरत

नहीं की थी, उनको अल्लाह तआला ने मुमिन कह कर पुकारा है।

सुन्नत से हिजरत की दलील नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का यह फरमान है :

ع لا تنقطع الهجرة حتى تنقطع التوبة ولا تنقطع التوبة حتى تطلع الشّمس من مغربها ع

अनुवाद :

(हिजरत उस समय तक ख़त्म नहीं होगी जब तक तौबा ख़त्म न हो, और तौबा उस समय तक ख़त्म नहीं होगी जब तक कि सूर्य पश्चिम की ओर से उदय न हो, (अर्थात हिजरत क़्यामत तक बाक़ी रहेगी।)

जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मदीना में जम गये तो इस्लाम के बाक़ी अहकाम (आदेश) का हुक्म हुआ, जैसे ज़कात, रोज़े, हज्ज, जिहाद (अर्थात धर्मयुद्ध), अजान तथा भलाई का हुक्म और बुराई से रोकना इत्यादि...! इन कामों में दस साल लगे। फ़िर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का देहान्त हो गया।

आप का लाया हुआ दीन आज भी बाक़ी है और क़्यामत तक बाक़ी रहेगा।

(हमारे प्यारे नबी ने) अपनी उम्मत को एक एक भलाई की बात बताई, और एक एक बुराई वाली बात से सावधान कर दिया।

भली चीज़ें: तौहीद और वह सब कार्य हैं जिन से अल्लाह प्रसन्न और खुश होता है।

बुरी चीज़ें: शिर्क और वह सब कार्य हैं जिन को अल्लाह नापसँद करता है।

आप, अल्लाह की तरफ से तमाम लोगों के लिये रसूल बन कर आये हैं। और आप की आज्ञाकारी सारे जिन्न व इन्सानों पर फर्ज (अनिवार्य) है।

इस का प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है:

﴿ قُلۡ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنِّي رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيۡكُمۡ جَمِيعًا ﴾

(الأعراف 158)

अनुवाद :

«आप कह दीजिये कि ऐ लोगो! मैं अल्लाह की तरफ से तुम सब के लिये रसूल बना कर भेजा गया हूँ।»

[आराफ आयतः 158]

आप के द्वारा अल्लाह तआला ने इस्लाम धर्म को पूरा कर दिया है।

इसका प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है:

﴿ ٱلۡيَوۡمَ أَكۡمَلۡتُ لَكُمۡ دِينَكُمۡ وَأَتۡمَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ نِعۡمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلۡإِسۡلَٰمَ دِينٗاۚ ﴾ (المائدة 003)

अनुवाद :

«आज के दिन मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन पूरा कर दिया है, तथा अपनी निअ्मत तुम्हारे ऊपर पूरी कर दी है। और इस्लाम को तुम्हारे लिये धर्म के रूप में पसँद कर लिया है।» [मायदा आयतः 3]

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की **मौत** हो जाने की दलील यह हैः

﴿ إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُم مَّيِّتُونَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَـٰمَةِ عِندَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ﴿٣١﴾ ﴾ (الزمر 030-031)

अनुवाद :

«बेशक (ऐ नबी) तुम्हें भी मरना है। और बेशक उन (लोगों) को भी मरना है। फ़िर क़यामत के दिन तुम सब अपने रब व मालिक के पास झगड़ोगे।»

[ज़ुमर आयतः 30-31]

सारे लोग क़यामत के दिन **दौबारा ज़िन्दे** किये जायेंगे, इसकी दलील यह है :

﴿ مِنْهَا خَلَقْنَـٰكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَىٰ ﴿٥٥﴾ ﴾ (طه 055)

अनुवाद :

«इसी (ज़मीन) से हमने तुम्हें पैदा किया है, इसी में तुम्हें लोटायेंगे, और इसी से फ़िर दौबारा निकाल खड़ा करेंगे।» [ताहा, आयतः 55]

इसी प्रकार अल्लाह का यह फरमान है :

﴿ وَٱللَّهُ أَنۢبَتَكُم مِّنَ ٱلۡأَرۡضِ نَبَاتٗا ١٧ ثُمَّ يُعِيدُكُمۡ فِيهَا وَيُخۡرِجُكُمۡ إِخۡرَاجٗا ١٨ ﴾ (نوح 017-018)

अनुवाद :

«अल्लाह ही ने तुम को ज़मीन से एक विशेष रूप से उगाया है। फ़िर वही तुम को उस में लोटायेगा, और वही तुम्हें उस से दौबारा निकाल खड़ा करेगा।»

[नूह, आयतः 17-18]

लोग जब (क़यामत के दिन) दौबारा ज़िन्दा कर लिये जायेंगे तो उन से **हिसाब लिया जायेगा** और हर एक को उसके कर्म का बदला दिया जायेगा।

इसकी दलील अल्लाह का यह फरमान है :

﴿ لِيَجۡزِيَ ٱلَّذِينَ أَسَٰٓـُٔواْ بِمَا عَمِلُواْ وَيَجۡزِيَ ٱلَّذِينَ أَحۡسَنُواْ بِٱلۡحُسۡنَى ٣١ ﴾ (النجم 031)

अनुवाद :

«ताकि जिन्होंने (इस दुनिया में) बुरे काम किये, उन को (अल्लाह तआला) उनके कर्मों का बदला दे, और जिन्होंने अच्छे काम किये उनको अच्छा बदला दे।»

[नज्म आयतः 31]

और जो व्यक्ति (क़यामत के दिन) ज़िन्दा करके उठाये जाने का इनकार करता है तो वह काफिर और नास्तिक है।

इसकी दलील यह है :

﴿ زَعَمَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓاْ أَن لَّن يُبۡعَثُواْۚ قُلۡ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبۡعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلۡتُمۡۚ وَذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرٞ ٧ ﴾ (التغابن 007)

अनुवाद :

«काफिरों का गुमान है कि वह दौबारा ज़िन्दा नहीं किये जायेंगे, आप कह दीजियेः क्यों नहीं? अल्लाह की क़सम तुम जरूर दौबारा ज़िन्दा किये जाओगे, फ़िर जो कुछ (तुम ने दुनिया मे) किया उसके बारे में तुम्हे जरूर ख़बर दी जायेगी, और यह अल्लाह के लिये बहुत आसान काम है।» [तग़ाबुन आयतः 7]

अल्लाह ने सारे रसूलों को खुशख़बरी देने वाला और सावधान करने वाला बना कर भेजा। इस की दलील अल्लाह का यह फरमान है :

﴿ رُّسُلٗا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى ٱللَّهِ حُجَّةُۢ بَعۡدَ ٱلرُّسُلِۚ ﴾ (النساء 165)

अनुवाद :

«(हम नें) इन सारे रसूलों को खुशख़बरी देने वाला तथा सावधान करने वाला बनाकर भेजा, ताकि अल्लाह पर लोगों के लिये रसूल भेज देने के बाद कोई हुज्जत व दलील अर्थात (तर्क) बाक़ी न रह जाये।» [निसा आयतः 165]

सब से पहले नबी हजरत नूह (अलैहिस्सलाम) और सब से आख़िरी व अन्तिम नबी हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं।

हजरत नूह (अलैहिस्सलाम) के सब से पहले नबी होने की दलील अल्लाह तआला का यह फरमान है :

﴿ ۞ إِنَّآ أَوۡحَيۡنَآ إِلَيۡكَ كَمَآ أَوۡحَيۡنَآ إِلَىٰ نُوحٖ وَٱلنَّبِيِّـۧنَ مِنۢ بَعۡدِهِۦۚ ﴾ (النساء 63)

अनुवाद :

«हम ने तुम्हारे पास उसी प्रकार वह्यी (प्रकाशना) की है जैसे नूह (अलैहिस्सलाम) की तरफ और उन के बाद

आने वाले दूसरे नबियों की तरफ वह्यी (प्रकाशना) की थी।» [निसा आयतः 63]

हजरत नूह (अलैहिस्सलाम) के ज़माने से लेकर हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ज़माने तक अल्लाह तआला हर एक क़ौम (समुदाय) में रसूल भेजता रहा, जो उनको केवल एक अल्लाह की इबादत का हुक्म देते और तागूत (असुर) की इबादत से मना करते थे। इसका प्रमाण अल्लाह का यह फरमान है :

﴿ وَلَقَدۡ بَعَثۡنَا فِي كُلِّ أُمَّةٖ رَّسُولًا أَنِ ٱعۡبُدُواْ ٱللَّهَ وَٱجۡتَنِبُواْ ٱلطَّٰغُوتَۖ ﴾ (النحل 036)

अनुवाद :

«हम ने हर क़ौम की तरफ रसूल भेजा (ताकि वह लोगों से कहें कि) केवल अल्लाह की इबादत करो और तागूत से बचो।» [नह्ल आयतः 36]

अल्लाह तआला ने सारे बंदों पर तागूत का इनकार और अल्लाह पर ईमान लाने को फर्ज (अनिवार्य) कर दिया है।

इमाम ***इब्ने क़य्यिम*** फरमाते हैं :

तागूत का अर्थः (हर वह चीज़ जिस की इबादत करके या उसके पीछे लग कर अथवा उसकी बात मान

कर बन्दा अपनी हद (सीमा) से आगे बढ़ जाये) उस को तागूत (असुर) कहते हैं।

तागूत बहुत हैं, लैकिन उनके सरपँच पाँच हैं :

1- इबलीस (शैतान)।

2- वह व्यक्ति जिसकी उपासना की जाये और वह उस से खुश हो।

3- वह व्यक्ति जो लोगों को अपनी उपासना की ओर बुलाये।

4- वह व्यक्ति जो ग़ैब के जानने का दावा करे।

5- वह व्यक्ति जो अल्लाह के उतारे हुऐ क़ानून द्वारा राज अथवा फैसला (न्याय) न करे।

दलील अल्लाह का यह फरमान है :

﴿ لَآ إِكۡرَاهَ فِي ٱلدِّينِۖ قَد تَّبَيَّنَ ٱلرُّشۡدُ مِنَ ٱلۡغَيِّۚ فَمَن يَكۡفُرۡ بِٱلطَّٰغُوتِ وَيُؤۡمِنۢ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱسۡتَمۡسَكَ بِٱلۡعُرۡوَةِ ٱلۡوُثۡقَىٰ لَا ٱنفِصَامَ لَهَاۗ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ٢٥٦ ﴾ (البقرة 256)

अनुवाद :

«इस्लाम) धर्म में किसी तरह की कोई ज़बरदस्ती नहीं है। हिदायत अथवा सत्य गुमराही से अलग हो चुकी है। अतः जो तागूत का इनकार करके केवल अल्लाह पर ईमान लाये तो उस ने एक ऐसा मजबूत कड़ा थाम लिया

जो कभी टूट नहीं सकता। और अल्लाह तआला सुनने और जानने वाला है।» (सूरः बक़रः आयतः 256)

और यही ﴿ لا إله إلاّ الله ﴾ (लाइलाहाइल्लल्लाह) का अर्थ है।

हदीस शरीफ में आता है कि धर्म की नींव इस्लाम, उसका स्तम्भ नमाज़ तथा उसकी चोटी अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करना है।

ختم شد

والحمد لله أولا وآخرا

❁❁❁❁❁
❁❁❁
❁